प्र: आपका नाम क्या है ?
ज: मेरा नाम हसन अहमद है।

प्र: आपकी उम्र कितनी है ?
ज: मेरी उम्र 25 साल है।

प्र: कितने साल से कर रहे है आप ये काम ?
ज: करीब 15 साल से।

प्र: ये आप अपने करघे पर कर रहे हैं आप ?
ज: ये सब जो बिना रहा हमारा ही करघा है।

प्र: तो उस पर आपके भाई लोग करते हैं ?
ज: हां भाई है भतीजा है।

प्र: कितने करघे है गिनती में ?
ज: गिनती में यहां कम से कम नौ करघे हैं।

प्र: एक करघे पर कितने दिन में बन जाती है एक साड़ी ?

ज: 15 दिन भी लगता है।

प्र: तो आप अपने करघे पर अपनी ही तानी बाना लगाते है या लेकर आते हैं गिरहस्ता से ?
ज: हां अपनी ही, नहीं अपनी ही लगाते है।

प्र: हमेशा अपनी लगाते है ?
ज: हां।

प्र: साड़ी में कितनी लागत आती है ?
ज: लागत कोई...

प्र: रेशम वेशम मिलाकर ?
ज: ये सब जोड़कर मालिक दे भइया हमारे, वही बता सकते हैं, हम ये काम तो करते नही, हम खाली बुनते ही है।

प्र: अच्छा आपको इसकी जानकारी नहीं ?
ज: हां कोई खास जानकारी नहीं।

प्र: तो आप ये साड़ी बिन कर ले जाते है या आर्डर लेकर बिनते है ?
ज: नहीं हम तो सीधे ले जाते हैं।

प्र: आर्डर लेकर नहीं ?
ज: नहीं अपनी मर्जी से बुनते हैं जब हो जाता है ले जाकर बेचते हैं।

प्र: किसको बेचते हैं ?
ज: चौक में जाती है साड़ी तो।

प्र: नहीं आप सीधे चौक ले जाते हैं या किसी गिरहस्ता ?
ज: नहीं हम गिरहस्ता के यहां ले जाते हैं।

प्र: तो एक साड़ी का कितना मिल जाता है आपको ?
ज: जितनी कीमत उसकी है, उतना मिलता है, 1400

प्र: उसमें जो मजदूरी तानी वगैरह लगती है सब मिलाकर ?
ज: नहीं सब निकाल दे तो लगभग 500 आयेगी।

प्र: तो आपके ये जो करघे है उस पर आपके ही लोग ही बुनते है या मजदूर वगैरह रखा है ?
ज: नहीं मजदूर नहीं है हमारे यहां, हमारे यहां सब भाई भतीजे हैं।

प्र: और आपका परिवार सब साथ में रहता है खाना-पीना सब साथ में ?
ज: हां।

प्रः और एक साड़ी से 500 निकल आता है ?
जः हां।

प्रः और साड़ी बनने में 15 दिन लगते हैं ?
जः हां 15 दिन भी लगता है और कम भी लग सकता है 10 दिन 15 दिन, जैसा मेहनज करो । लाइट रहती है तो जल्दी काम करते हैं, जल्दी हो जाता है, और लाइट नहीं रहता है तो कम होता है।

प्रः पहले भी आपके पास इतने ही करघे थे ?
जः हां मतलब लड़कन बड़े हो गये हैं करघे बढ़ते चले गये, जितनी जगह है उतना हो गया।

प्रः पहले कितने थे, जब आप बुनना शुरू किये थे ?
जः पहले हमारे बड़े जो भाई लोग है बिन रहे थे अब हम लोग बिन रहे हैं। अब लोग घर पर बैठते हैं, रूमाल ख्याल रखते है धंधे का।

प्रः मतलब करघे बड़े है या घटे हैं, हम ये जानना चाह रहे हैं ?
जः बराबर है।

प्रः उतने ही हैं ?
जः हां।

प्रः बढ़े भी नहीं है ?
जः नहीं बढ़ने का सवाल ही नहीं उठता, बढ़ेगा कहां से।

प्रः कहीं कुछ लोगों को बढ़ा है ?
जः हां, जैसा जिसका चलता है, उस हिसाब से होता है।

प्रः तो ये बताइये नौ करघे का मिलाकर सब भाई जो बिनते है तो कितना आमदनी हो पाती होगी, लागत वागत निकाल कर ?
जः लागत निकाल कर...

प्रः लगभग में बता दिजिए ?
जः ये तो हमारे भइया ही बता सकते हैं।

प्रः लगभग ?
जः लगभग में बताये तो दस हजार तो होता ही होगा।

प्रः और खाने पीने वाले लोग कितने है घर में ?
जः खाने पीने लोग कम से कम 60-70 लोग होंगे।

प्र: 60-70 लोग ?
ज: हां, मतलब सब मिलाकर, जैसे हमरे यहां जितने लोग है घर में, सब मिलाकर।

प्र: सबका खाना साथ में बनता है ?
ज: नहीं अब जेसे कि चार भाई हैं तो चार भाई के लड़के सब अलग-अलग रहते हैं कोई लोग के 18 आदमी है, कोई लोग के 10 ही आदमी है, इससे कम लोग कोई में नहीं हैं।

प्र: तो ये बताइये चल जाता है आराम से खर्च ?
ज: आराम से क्या मतलब, चल जाता है किसी तरह, आप खुद सोच लिजिए जब 500 रुपये हम लोगों का रहता है साड़ी में, 15 दिन में 500 पड़ता। तो पड़ता नहीं है कम से कम 1000 रुपया चाहिए उतने में न, परेशानी भी रहती है चलता भी है उसी में ।

प्र: अभी आप बता रहे थे कि स्थिति खराब होती जा रही है तो कब से आपको लग रहा है, आप तो काफी साल से बुन रहे होंगे, तो जब बुनना शुरू किये थे और आज में कुद बदलाब नजर आता है ?
ज: बदलाव बहुत आया मतलब पहले जो स्थिति थी बहुत अच्छी स्थिति थ्ज्ञी अब स्थिति बहुत खराब होती जा रही है।

प्र: किस मायने में ?
ज: जैसे कि हर समान मंहगा हो रहा है इसका, जैसे रेशम या तार और साड़ी का दाम तो बड़ा नहीं उतने का उतना ही है आज तक।

प्र: यही कारण है ?
ज: हां, यही कारण है।

प्र: तो क्या कारण लगता है कि दिन पर दिन खराब होती जा रही है स्थिति ?
ज: कारण इसका यही है मशीन जब से लगी है, तब से बाजार कम होती जा रही है।

प्र: पावरलूम से ?
ज: हां, उसके लगने से इसकी बाजार बहुत कम होती जा रही है।

प्र: आप भी पावरलूम लगाना चाह रहे हैं ?
ज: चाहते तो हैं लेकिन होगा तब तो लगायेंगे।

प्र: कोशिश आपकी भी है या इसी में बढ़ाना चाहते हैं ?
ज: कोशिश है, नही इसमें नहीं चाहते इसमें बढ़ाने का कोई फायदा नहीं हैं

प्र: उसमें ही जाना चाहते हैं आप लोग ?
ज: हां काफी लोग उसमें चले भी गये, काफी लोग है भी, जिसकी स्थिति है लगा लिया है, मतलब कि से खत्म हो जायेगा जल्द ही।

प्र: मतलब की हथकरघा ?
ज: हां हथकरघा।

प्र: आपके दूसरे साथी पावरलूम में चले गये हैं क्या ?
ज: हां कुछ गये हैं, कुछ इसी में हैं जैसे हम लोग हैं और दूसरे यहां भी देखो लूम लगी हुई है, और बढ़ेगी भी आगे, करघे बन्द होते जा रहे हैं बराबर।

प्र: इसी कारण क्योंकि ये माल बिक नहीं रहा है और मंहगा होता जा रहा है ?
ज: हां इसमें फायदा हो ही नहीं रही है पहले से बहुत कम है, इसकी स्थिति मतलब बहुत खराब है।

प्र: अच्छा आप किसी बुनकर समिति को जानते हैं ?
ज: बुनकर..... जैसे अजिज साहब लोग है कुछ पढ़ने का तो लेआ के चले थे कुछ लोग के।

प्र: आप किसी समिति से जुड़े नहीं हैं, आप जानते भी नहीं हैं ?
ज: जानने का तो मुहल्ले में ही समिति है तो जानते क्यों नहीं पर उन से हमारा कोई ताल्लुकात नहीं रहता।

प्र: हम इसलिए पूछ रहे हैं कि आप लोग को कभी कोई दिक्कत आयी, कर्ज लेना हुआ तो आप लोग किससे लेते हैं?
ज: कर्ज लेना देना..... जैसे कि जो गिरहस्ता को हम साड़ी हैं उन्हीं से ले लेते हैं, अब उन्ही से कटायी देते हैं।

प्र: बैंक से या समिति बनाकर कभी नहीं ?
ज: नहीं ऐसा कभी नहीं किया।

प्र: बैंक के वैसे सुने है कि बहुत तरह की योजनाऐं हैं, कभी आप पता नहीं किये, वहां जाकर ?
ज: नहीं, हम लोगों को इतनी जानकारी है ही नहीं कि जायेंगे, जो पढ़े लिखे हैं, जैसे ढेर पढ़े लिखे हैं, जानकारी उनको ज्यादा है तो जा सकते है, हम लोगों को तो ये सब समझे में नहीं आता इतना।

प्र: कभी लिये हैं आप कर्ज ?
ज: नहीं।

प्र: या आप के घर में अब्बू लोग कोई ?
ज: नहीं।

प्र: कभी लेने की जरूरत नही पड़ी ?
ज: जरूरत का मतलब की बताए तो रहे हैं। जे वक्त जरूरत हो गिरहस्ता से ले लेते है, काम चल जाता है फिर कटा भी देते हैं धीरे-धीरे।

प्र: साड़ी बिन के कट जाता होगा उसमें ?
ज: हां धीरे-धीरे कट जाता है।

प्रः तो आगे आप ये काम छोड़ कर पावरलूम में जाना चाहते हैं ?
जः चाहते तो ऐसा ही हैं।